शब्दसार®

विलास जैन

(दोहे)

यह कार्य नही क्रांति है।

समर्पण

यह पुस्तक समर्पित है
वसुंधरा के उन रक्षको को,
जो
इसे अपनी विरासत नही
बल्कि
अपने बच्चो की,
धरोहर मानकर
जतन करते है।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

अल्प परिचय – विलास जैन

विलास जैन इनका जन्म एक छोटेसे गाँव मे हुआ। गाँव मे पढ़ाई की सुविधा न होने के कारण उन्हे छोटी उम्र मे ही गाँव छोड़कर शहरमे पढ़ाई के लिये जाना पड़ा। उन्हे किसी का भी मार्गदर्शन न होते हुए भी उन्होने सन १९८८ मे पुणे शहरके एक नामांकित संस्थासे एम.बी.ए. (मार्केटींग) का अध्ययन पूरा किया। उसके बाद उन्होने ॲडहेसिव्ह एवं सिलंन्टस् का व्यवसाय शुरु किया। शुरु मे कुछ वर्ष बेचनेका व्यवसाय किया फिर बादमे वही चीजोका खुद उत्पादन शुरु किया। उनका व्यक्तिमत्व बहुमुखी होने के कारण आज वह एक सफल और दूरदर्षी उद्योजक है। उन्होने ॲडहेसिव्ह एवं सिलंन्टस् पदार्थो मे दो नये संशोधन किये। और अनेक उत्पादन खुद बनाये। वह एक सफल उद्योजक, संशोधक, किसान, समाजकारणी, राजकारणी तो है ही, साथ मे एक उत्कृष्ट साहित्यीक भी है। उनके साहीत्य हिंदी एवं मराठी भाषामे है। संपूर्ण साहित्य समाजपयोगी, संस्कारीत करनेवाले, प्रेरणा देनेवाले, अध्यात्म का महत्व बतलानेवाले और नैतिक मूल्य बढ़ाने वाले है। उन्होने हिंदी एवं मराठी भाषामे बालकविताये, प्रेरणा कविताये, देशभक्तीपर कविता, कव्वाली, दोहे, प्रेरक शायरी, सुविचार, सिनेगीत, भजन, जीवन दर्शन कवितायें, ग्रहोपर कविताये, समाज रचनापर कविताये, छोटी शिक्षाप्रद कहानियाँ, मराठी गझल ऐसे अनेक साहित्य का एक बड़ा संग्रह तैय्यार किया है। उनकी अबतक पाँच किताबे प्रकाशित हो चुकी है और पाँच किताबे प्रकाशित होने के मार्गपर है। उनका सामाजिक, राजकीय और अध्यात्मिक विषयोका भरपूर अनुभव तथा गाँव और शहर के वातावरण मे बिताये हुये कई साल उनको अपने साहित्ययात्रा मे बहुत ही महत्वपुर्ण साबित हुये है। प्रकृती से अधिक प्रेम होने के कारण उन्होंने आज तक हजारो वृक्ष लगाये है। और संपुर्ण किताबोसे मिलनेवाली राशी पर्यावरण सुरक्षितता में ही खर्च होगी इसका उन्होंने प्रण किया है।

शब्दसार®

प्रकाशन : प्रथम

प्रकाशक : विलास जैन

लेखन : विलास जैन

प्रतिया : १०००

अक्षरांकन : विलास जैन

निर्मिती : विलास जैन

मुद्रक : विश्वरुपा प्रिंटस्, जलगांव.

© All Right Reserved 2013
New Era Self Help Marketing India Ltd. is registered in India under Public Ltd. Company
Act 1956 Reg. No. U51909 MH2002 PLC 138100

सर्वाधिकार सुरक्षित :

पूर्वानुमति के बगैर इस पुस्तक में से किसी भी अंश को किसी भी कारण से या किसी भी रुप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाशन के संदर्भ में अनधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ कानूनी कारवाई की जायेगी।

यह कार्य नही क्रांति है।

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य मे दोहे का महत्व बहुत बड़ा है। दोहे याने कुछ मीठे शब्दोकी पक्तींयाँ जो आपको जीवन का पूरा सार या जीवन का पूरा दर्शन चार पक्तींयोमे करा देती है। अनेक शिक्षाप्रद बाते दोहे के माध्यम से समाज के जहन मे बिठाई जा सकती है। बड़े ही कोशिश के बाद मै अपने लिखे हुये दोहे आपके सामने रखने का प्रयास कर पाया हूँ। अपने दोहे के माध्यम से मैने वृक्षो का आज इस धरतीपर कितना महत्व है, यह बताने का प्रयास किया है। समाज के कुछ कुरितीया और दांभिकता को दिखाने का प्रयास किया है। सावन के प्रति जगी मेरे भावोको प्रकट किया है एवं प्लास्टिक के उपर कुछ दोहे रचकर एक नया प्रयोग किया है। विशेषकर मन के उपर, उसके चंचलता को प्रकट करने कुछ दोहे की रचना की है। हर दोहे से आध्यात्मिकता, प्रकृती के प्रती आदर, सम्मान, भारतीय संस्कृती की जरुरत को उजागर किया है। कई बार हम जानते हुये भी कई गलतीयाँ करते है, तो कही अनजाने मे कुछ गलत काम हो जाते है। ऐसे वक्त पर हमे अनेक अच्छे साहित्य जैसे शेरो शायरी, दोहे, गीत, कविताये हमारे अंदरके अच्छे संस्कारोकी, आदतोंकी याद दिलाते है। और हम फिरसे हमारे मंझिल के राह पर अड़िग हो जाते है। संत तुलसीदासजीने और संत कबीरजी हमारे समाज को दोहे के माध्यम से जिनेकी कला सिखाई है। उन्हीसे प्रेरीत हो मैने एक छोटासा प्रयास यहाँपर दोहे लिखनेका किया है। आशा है आपको वह पसंद आयेंगें, आपके पथपर अग्रेसर होनेके लिये काम आयेंगें, गलत भ्रांतिया दूर करनेके काम आयेंगें और माँ प्रकृती को समझनेमे काम आयेंगें। धन्यवाद...!

आपका अपना
विलास जैन

शब्दसार®

।। सूची ।।

१)	वृक्ष दोहे	१.	
२)	दंभ दोहे	४.	
३)	सावन दोहे	६.	
४)	प्रेम दोहे	८.	
५)	मन दोहे	११.	
६)	प्लास्टिक दोहे	१६.	
७)	विविध दोहे	१७.	

वृक्ष दोहे

साँस देत जीवन जगाय
मरत चिता जलाय
महिमा वृक्ष की देखिये
पूरो साथ निभाय।

छाया दी, फल दिया
कहें साँस भी ले ड़ाल
मानव वृक्ष को काट के
ढूंढ़ रहयो अपनो काल।

वृक्ष शरीर देखिये
फल, फूल औषधियोंकी खान
मानव शरीर देखिये
करता है सिर्फ घान।

वृक्ष बुद्धिसे परे
दिलसे करे व्यवहार
मानव बुद्धि वापरे
होकर उसपर सवार।

मानव परायो कहत है
झूठे बहावे नीर
वृक्ष कहे सबको अपना
इसको सबकी फिकीर।

वृक्ष काट लकड़ी लिया
देखो मानव स्वभाव
मूर्ख बनके देखिये
हीरा बिका कोयला भाव।

जल थल वायु सिंचत है
ऐसो वृक्ष महान
जो इसको मानत नही
ताको स्वार्थी जान।

जीते जी सेवा करे
मरके अनाज दियो उबाल
मानव कब काम आयेगा
हड्डी दियो ना खाल।

बचपन मे पालना दिया
जवानी तेरा घर सजाया
बुढ़ापा शमशान घाट आया
कैसे तूने वृक्ष भुलाया।

दंभ दोहे

जब तन गंदा हो गया
गंगा जल लियो ड़ाल
अब गंगा मैली हो गयी
तो कौनसी चलोगे चाल।

गंगाजी के घाट पे
लगी भाटोकी हाट
जीने के लिए मृत्युंजय करे
मरेने वालेकी देखे बाट।

देश प्रेम हर कोई करे
संकट आवत भाग जाय
लेत देशको महान कहे
देत वक्त बिसराय।

साधु होकर पूजापाठ करे
सुखको स्वप्न दिखाय
जीवन सुखी तू करे
खुदको भूलो उपाय।

संसार छोड़ साधु भया
रोज खावे खीर
तु काहे का साधक
तुझे शरीर की फिकीर ।

सिर मुंडवाने की रीत से
पीर प्रकट हो जाय
सच्चाई को ढ़कने का
यो है सादो उपाय।

पूछे लोग पहाड़ से
किसो तू तुफान रूकाय
चूहा तुझपे आईके
रज रज माटी गिराय।

तूफान तन के आवत है
पहाड़ बाट रूकाय
चूहा खेलत आवत है
लियो अपने अंदर समाय।

पहाड़ सिर्फ खड़ा रहे
सागर ना इत उत जाये
सारा जग फिरके
क्यो कर तू उकताय।

पर्वत बड़ा होईके
ऊबड़ खाबड़ होय
खरगोश छोटा ही भला
जैसे आटे की लोय।

बड़ा बड़ा हर कोई कहे
बड़ा न आवे काम
छोटा अंदर जाईके
करदे सबके काम।

पूछत लोग पहाड़ से
किसो तू बड़ो कहाय
ना किसीको छाया दे
चढ़त उतरत थकाय।

सावन दोहे

मिलन को ऋतु सावन है
दूजो ऋतु नाही
आंगन परदेश लागत है
जब घरमे पिया माही।

पशु पक्षी धरती आकाश
सबको मिलन की आस
बिरहा लेकर आवत है
यो सावन को मास।

सजनी कहे साजन से
आओ हमारे पास
इत आवत उत जात है
यो सावन को मास।

झुमे पेड़ और पशु पक्षी
झुमे धरती आकास
रिमझिम करके आवत है
जब यो सावन को मास।

सब ऋतुओं का अनुभव किया
बनी रही खींचा तान
आवी गयो मनभावन सावन
अब निकालो थकान।

सावन मास बहन का
फिसलन लागे पाव
कोई बिरहा में जले
कोई करे भक्ती भाव।

प्रेम दोहे

प्रेम पियासु हो गया
फूलन लागो साँस
मै तो कछु कहु नही
नैनन पे नही विश्वास।

प्रेम रोग सबसे कठिन
जाको लागे प्राण
भूख प्यास जावत रहे
तड़पत निकले प्राण।

बिरहासे ये बिष भला
तुरंत लेत है प्राण
बिरहा क्षण क्षण मारे
जात नही है प्राण।

मन दोहे

मन मानव का बैरी है
हरकोई बली चढ़ जात
जो इसको रोकत है
वो सब सुखको पात।

समझ मनकी चाल तू
रोज चुकावे मार्ग
बहाने बना कर नये
रोके बननेसे तेरो भाग।

मन है बहुत आलसी
चाहे जो रोज आराम
आराम करने वालोको
कैसे मिलेगो राम।

मन है बैरी मानव का
या ऊपर वालेकी लगाम
मन जो होता तेरा
हो जाता तू भगवान।

चंचलता पथ से भटकावे
चंचल मन को स्वभाव
तन मन दोनो मिलके
डुबावे तुम्हारी नाव।

मन समझे खुदको अच्छा
तन कहे मेरो बड़ो काम
बिना करेही कछू दोनो
चाहे मिले उन्हे आराम।

मन है भूल भूलैय्या
जो इसमे भटक जात
जीवन भर चालता रहे
मंझिल को नही पात।

सौ मे से सिर्फ दस बातें
तू या मन की सुन
फिर या दस बातोंमेंसे
जो अच्छी लगे वो चुन।

तन का बोझ बड़ा नही
बड़ा है मन का बोझ
तन हल्का हो जायेंगा
मन ज़ीवन को डालेगा नोच।

तकलीफ सबको होत है
तूने कियो का बड़ो काम
तू जो ऐसा सोचत है
तू तन मन को गुलाम।

मन की मनमानी छोड़ दो
तन को ना दो विश्राम
फिर देखो कैसो तुम्हे
नही मिलत नाम और दाम।

मन से ज्यादा कार्य बड़ा
तन कारज से छोटा
दिखाओ उन्हे अपनी जगह
ये डुबाते है लोटा।

प्लास्टिक दोहे

लोहा ताकत से भरा
समय आवत मिट जात
अमरताका वरदान लिये
प्लास्टिक जगको खात।

मृत्युलोक की इस धरापर
सदा ना रहा कोई नाम
तो बताओ इस जमींपर
क्या है प्लास्टिक को काम।

ना बनाओ ऐसी बात तुम
जाको ना बिघड़े काम
आवत जावत नयो रहेंगो
यो मृत्युलोकको धाम।

विविध दोहे

देह दिया, लहु तेल,
आत्मा बन्यो बाती
बाती बिना दिया तेल
कछु ना काम आती।

देश प्रेम की भावना
जैसे दूध शक्कर घुल जाय
एक तो दूध ताकत दे
शक्कर मिठास बढ़ाय।

गुरु बिन जीवन ऐसे है
जैसे बिन लगाम का घोड़ा
हाथ ना आवेगा कभी
गर हमने इसको छोड़ा।

गधा प्रिय कुम्हार को
सुअर मेहतर मन लुभाये
जाको ताकु प्रिय है
तू क्यों मुँह बनाय।

हजाम हजामत करत है
लुहार लोहे को काम
जो लुहार हजामत करेगो
कर देगों नींद हराम।

कुत्ता मुँह से काटत है
गधा मारे है लात
जैसे जाकी प्रतिभा
तैसी ताकी बात।

मानव तू हंस था
आज कौआ हो गया
मोती चुगता था एक दिन
अब घान खाके सो गया।

राजनीती और कूटनीती
जैसे दिया मे जलती बाती
दिया खाली छोड़के
बाती तेल पी उड़ जाती।

काम और दाम दोनो रहे
रहयो न हरी को नाम
बिना हरी के नाम जीवन
जैसे मदिरालयमें खाली जाम।

कुम्हार घड़े माटीकी घाघरी
सब जन के आवे काम
गुरु घड़ावे आदमी
क्यो न आवे किसीके काम।

लुहार तपावे लोहेको
तब आवत है काम
बिना तपाये शरीर को
होत नही है नाम।

बड़ा होवन के लिए
कार्य को वक्त से सींच
वक्त का पानी दिये बिना
नही बचेगा जीवन के बीच।

खुदको बड़ा समझ के
ना कर कोई भूल
तुझसे बड़े अनेक है
ना गलतफैहमीमें झूल।

खुदको फँसाना छोड़के
कार्य को समर्पित हो जा
सब बंधन को तोड़ के
तू मंझिल तक पहुँच जा।

हर बातों मे संकट दिखे
सदा रहे भय भीत
ड़रके आनंद को दूर भागना
नही जगन की रीत।

दानवो को अच्छी लगे
क्रूरता हिंसा और वासना
ऐसा करके मानवताको
तू कालीमा ना फाँसना।

सत प्रीत और रीत
बने रहे मित माही
यह जीवन फिर नही मिलेगा
समझ मेरे भाई।

कपड़ा पहन मानव भया
चल तू मानवकी चाल
काल तुझे निगल जायेगा
बनेगा तू बेताल।

दो गज दो हाथ जमीन
आती जलाने गाड़ने काम
व्यर्थ के संचयमे लगकर
क्यो होता बदनाम।

जल, थल, वायु अब ना
आयेंगो तेरे काम
तूने तो मनमानी की
अब वो दिखायेंगे काम।

बुरे काम के लिए
कियो सृष्टि को इस्तेमाल
अब उसकी बारी है
आ गयो तेरो काल।

मंदिर मे भजो भगवान
घरमे भजो भागवान
ना तू घरका रहा
ना गया शमशान।

सबको अपने वश करे
बतावे उनकी जात
हाड़ मास का तू बना
भूले क्यु अपनी औकात।

बन ठन कर तू बैठ गई
हाथ को कछु नही काम
बुल बुल सुंदर दिखकर
करे पिंजड़े मे अपनो इंतजाम।

सुंदर दिखना बुरा नही
बनो तुम सुसंस्कृत
नंगे पन पर उतरकर
क्यो होते हो विकृत।

पहले मै धूल था
अब बन गया हूँ मैल
देखो कैसे मै जिया
हारा ना जीता खेल।

फूल काटो पर पड़ा
खूब फैलावे सुंगध
तू सुविधाओसे घिरा
क्यो फैलावे दुर्गंध।

संकटोसे ड़रकर तू
क्यो हो जावे बेरंग
फूल काटोंसे घिरा
कितने दिखावे रंग।

नाग विषधारी भला
खुदकी बचावे जान
तू तो मानव होईके
काटे कईयोंकी मान।

रोने से तू बोल क्या
सुधरे बिगड़ी तकदीर
संकटो में तू हँसले
उसको तेरी फिकीर।

पश्चाताप के आँसुओसे
धो तू मनका मैल
कुकर्मो पर ना रोएगा
तो हो जायेगा फेल।

आँसुओसे बहत है
भावनाओंके पूर
जो आँसु सूख गये
खो जायेगा नूर।

आँखें भरी आँसुओसे
मनमें भरी है भावना
हृदय प्रेम से है भरा
बुद्धि करे है कामना।

मै भिखारी ही भला
मनमे बनी सदभावना
जो अमीर बन जाऊंगा
मन को पड़ेगा बेचना।

चीख कर ना खुदा मिले
भज कर ना भगवान
दीन दुखियारे संग खड़ा
तेरा रहीम मेरा राम।

कोई बढ़ावे बाल मुँहपर
कोई रखे सर शीर
खून सभीका क्यो सरीखा
क्यों एकसा नीर।

सज धज कर तू बतावे
क्या है तेरा धरम
जो धरम समज गया
भूल जायेंगा क्रियाकर्म।

धग धग कर चिता जली
बेबस सब सरे आम
टूट गये बंधन जगतके
छूट गये सब काम।

आग शरीर खा गई
धुआँ उड़ा ले गया मन
बच गई राख चिता में
ऐसा अजीब ये समापन।

चित से चिता ना हटा
ना हो तू मगरुर
रथी, महारथी राजा रंक
ना बचा कोई क्रूर।

गधा हँसकर बोझ बहें
सुबह लदा श्याम उतर जात
कुम्हार संसार बोझ तले दबा
बहेना पड़े दिन रात।

मिट्टी को कोई मोल नही
मिट्टी को नही कोई भाव
मोल भाव मे जिंदगी कटी
बचा मिट्टी का ही नाव।

गधा कहे मै बड़ा
कुम्हार का ना कोई मेल
दोनो मिट्टी से बने
सब मिट्टी का है खेल।

मिट्टी बेहता है गधा
मिट्टी रोंधता कुम्हार
मिट्टी बननेसे पहले
करते मिट्टीका कारोबार।

गुरु बिन जीवन ऐसे
जैसे बिन पतवार की नाव
चल रहा राही मगर
पहुंचा नही कौनसे गाँव।

मै अनादी अनंत हूँ
क्यु खुदको नही पहीचाना
मिट्टी से ही खेल रहा हूँ
मै मिट्टी का खिलौना।

हाड़ मांस के पिंजरे पर
चमड़ी चादर ओढ़
क्षणमे प्राण पखेरु उड़ जायेंगे
अब तू मनमानी छोड़।

मै मिट्टी से बना
कितनी बताऊ अपनी पहीचान
कितने याद रखेंगे
जब निकल जायेगे प्राण।

मै मिट्टी से बना
बना रहूँ आदमी आम
मिट्टी बनने से पहले
आऊ किसीके काम

शरीर की ताकत पर
अब ना तू इतरा
सड़ने गलने का इसे
हरदम है खतरा।

क्षण सड़े, क्षण मे गले
समझ शरीर को खेल
नश्वर इस संसार मे
रख आत्मनसे तू मेल।

आभार

उन सब के प्रति
जो अच्छे हैं।
अच्छा होने के लिये
सदैव तत्पर हैं।
अच्छा हो इसलिये
प्रार्थना करते हैं।
अच्छा करने के लिये
कड़ी मेहनत करते हैं।
अच्छे व्यक्ति की
दिल से प्रशंसा करते हैं।
और हरदम अच्छे के
पक्ष मे तन-मन-धन
देने को तैयार रहते हैं।
धन्यवाद !

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

मेरा परीचय

“ परिचय अपना क्या लिखू
मै इस धरा का मेहमान
होवे इन्सानियत के काम मुझसे
बना रहा हूँ इन्सान।

मिट्टी से मै बना
क्या बताऊ पहीचान
कितने याद रखेंगे
जब निकल जायेगें प्राण।

चाहत मेरी एक ही
बना रहूँ आदमी आम
मिट्टी बनने से पहले
आऊ किसीके काम। ”

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

कीमत ₹–१००/–

यह कार्य नही क्रांति है।